भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 18 अंक : 5 | बुधवार, 26.5.1995 | वार्षिक चंदा : 50.00

ब्रह्मप्रवाह

आज – आज भाई अभी

प.भ. साधक बहनों व भक्तों को बम्बई.....

जिस स्वरूप को हम मानते हों उसमें सही अर्थ में ही जुड़ जाकर उसकी ही मर्जी के मुताबिक वर्त पाते हैं? उसमें क्या आड़े आता है? क्यों आड़े आता है? वैसा देह या जीव या मायिकभाव जानते हुए भी क्यों रह जाता है? या जानबूझ कर ही रख रखा है? या निकालना तो है ही पर निकल पा नहीं रहा? तो क्या अधिक कृपा की जरूरत है? अतिशय-एक कोने में अकेले बैठकर सतत् अंतः दृष्टि और प्रार्थना करोगे तो भी धारा कुछ होने वाला नहीं। परन्तु (take decision seriously) गंभीर होकर निर्णय लो। प्रभु और संतो की हाजरी मानकर तीव्र गंभीर संकल्प करके चार घंटे तो जीने का शुरु करो ही, नही तो कम से कम 3 घंटे तो करो ही। तब अति बड़े पुरुष की दृष्टी होगी व कृपा तथा अनुग्रह होगा जिससे खूब ही बल मिलने पर उसके ही होकर उसकी ही मर्जी मुताबिक जीना आ जायेगा। पश्चात् ही रूपांतर-परिवर्तन की शुरूआत होती है। प्रथम दिव्य-सचेतन संबंध, आध्यात्मिक संबंध पक्का होना चाहिएः **निभा लेने का तो नहीं ही।** इसलिए अब तो रात्रि की प्रार्थना और सुबह उठते ही मानसी-नौकार मंत्र सहित खूब काम आयेगी।

Start doing right now immediately. Whatever you decide to please your Gurudev. But do it seriously at least for a week continuously without fail and with faith and enthusiasm. Then god will help hundred times. Just experience yourself.

तुम लोग मेरे आने तक में अब स्वभाव टालकर स्वरूपभाव में रहते हो जाओ या वैसी आदत तो डालो ही। वही सच्चा स्वरूपयोग और वही है ज्ञान को क्रियान्वित करना।

आप सभी ने ता. 14-15 को मलाड में प.पू कंतिकाका का प्रसंग व function मिलजुल कर मनाया, वह जान कर बहुत ही खुश होने जैसा है। तो सभी को महाराज और स्वामी खूब बल दें। दो-तीन भक्तों के साथ रसरूप होकर जीना सीख ही जाना, जिससे सभी को पता चलेगा कि ऐन मौके पर कितना मनधारा-मन की मर्जी के मुताबिक होता है और कितना गुरूमुखी होता है। इसलिए अंतर से प्रार्थना करके जीना ही। वर्तन में लाकर चलने लग पड़ो, भले गल्तियाँ हों....

सभी को याद.....

लि. आपके ही दादुकाका के
हेतपूर्वक जय स्वामिनारायण!

12 जून....गुणातीत समाज के प्राणाधार प.पू. काकाजी का प्रागट्यदिन.....

12 जून..... हम सभी के प्राणाधार व गुणातीत समाज के शूरवीर अधिष्ठाता- प्रवर्तक प.पू. काकाजी ने धरती पर प्रगट होने का यह मगंलकारी दिन चुना.... वास्तव में तो ऐसे भगवान धारक पुरूषों को आना-जाना है ही नहीं.... वे नित्य अविनाशी तत्व होते हैं....वे तो स्वतन्त्र रूप से दिखते हैं-अदृश्य हो जाते हैं। और....हम सब को भक्ति अदा करने का मौका देने, हमें सेवा का पुण्य देने, हमारे प्रारब्ध काटने निमित्त दिन चुनते हैं। मानव मर्यादा की कक्षा में ही रहकर अपनी सारी क्रियाएँ करते हैं....जगत के सामान्य व्यक्तियों की तरह ही जन्म-मरण, हर्ष-शोक ग्रहण करते हैं। लेकिन उनके प्रगट होने की वह पल जीव मात्र को धन्य कर जाती है। क्योंकि-ऐसी दिव्य विभूति के प्रागटय् से जीव सनाथ होता है। उनके संबंध से-करोड़ों जन्मों से जन्म-मरण के चक्कर में फंसे जीव की आत्मा मुक्ति को पाती है।

प.पू. काकाजी के व्यक्तित्व बारे.....भीतरी व्यक्तित्व तो अखंड भगवान की शक्ति धारण किए हुए.....दिव्य तेजपुंज.... परन्तु उनका बाहरी व्यक्तित्व भी अनोखी चुम्बकीय शक्ति धारण किए हुए था। महर्षि रमण के बारे में ऐसा कहा जाता है कि वे जहां भी बैठते थे वहां अनोखी दिव्य शांति का वातावरण उत्पन्न हो जाता था और यहां तक कि जंगल में रहने वाले पशु-पक्षी अपनी प्रकृति छोड़कर उनके सम्मुख बैठ जाते थे। आस-पास बैठे लोगों के मन में से वैमनस्य और द्वैष की भावनाएँ लुप्त हो जाती थी, मानो किसी ने उन्हें खींच लिया हो। महापुरूषों के चुम्बकीय आकर्षण बड़े शक्तिशाली, शुद्ध व व्यापक होते हैं। यह चमत्कार नहीं - पर प्रभु की सत्ता का हमें अनुभव कराने सत्पुरूष हमें अनुभव कराते हैं। यह अनुभव प.पू. काकाजी के साथ सभी ने किया होगा। हम चाहे कितने भी (tension) के विचारों में हों.....पर प.पू. काकाजी के दर्शनमात्र से भीतर में शांति -शांति हो जाती थी। विचार विराम को पा जाते थे.....वाणी मूक हो जाती थी और यूं लगता कि जैसे हमारा नाड़ी प्राण उन्होंने खींच लीया हो।

प.पू. काकाजी जब तक जगत के क्षेत्र में रहे तो भी हर एक क्षेत्र में उन्होंने सफलता पाई और जब आध्यात्मिक क्षेत्र में आये तो वहां भी उन्होंने पूर्णता प्राप्त की। तन, मन, धन, बुद्धि सर्वस्व गुरूचरणों में समपर्ति कर गुरू के अन्तर को हाश करके गुरू का वारसा पाया....अपने इस लाडले शिष्य पर गुरू की प्रसन्नता का यह प्रसंग निहारें.....

दिनाँक 8-12-63 नेनपुर मंदिर में प.पू. योगी बापा वचनामृत समझा रहे थे। आगे की पंक्ति में प.पू. काकाजी भी बैठे थे। तब पू. दासकाका ने बापा से पूछा -

'बापा ! निर्दोषबुद्धि रखनी तो है लेकिन रहती नहीं।'

योगी बापा लाक्षणिक ढंग से मीठी आवाज में बोले- **'हे दादुभाई साहेब, निर्दोषबुद्धि के बारे समझाओ। तुम्हारी बात बहुत अच्छी लगती है। दादुभाई मुरली बजाएँ तो सब को रंग लग जाता है।'** तब नेनपुर वाले आत्माराम काका बोले- बापा! स्वामिनारायण प्रकाश आते ही सबसे पहले में दादुभाई का लेख पढ़ता हूँ। तब बापा बोले-**'ये तो सच में ऐसे हैं, पहचानने जैसे हैं।'** प.पू. काकाजी ने खुलकर निर्दोषबुद्धि का रहस्य समझाते हुए कहा- संबंध वाले किसी का स्वभाव-प्रकृति-दोष देखना नहीं, समझ ना आए तो चला लेना। जगत में कैसे चला लेते हैं? संबंध वाले मुक्त के प्रति दिव्यबुद्धि नहीं है, तो महाराज के प्रति भी नहीं है। निर्दोषबुद्धि संत के समागम से आती है। फिर अहमदाबाद वाले जगजीवनभाई ने प्रश्न करा-

'बापा, ऐसे संत कौन?' तब बापा बोले- गली-गली और घर-घर दुल्हा नहीं होता। ऐसे तो दादुभाई जैसे कोई विरल होते हैं। यूं प.पू. काकाजी की महिमा बापा स्वयं प्रसंग-प्रसंग पर समझाते। सच! शिष्य के जीवन की धन्यता तो उसके गुरू की हाश-प्रसन्नता पा लेने में ही है न ?

आज सभी जगह पर समग्र गुणातीत समाज के मुक्तों प्रभु के मार्ग पर चलने जो सरलता-जो हल्कापन, जो आसानी, जो सुविधा, जो माहात्मय अनुभव करते हैं उसकी जड़ में प.पू. काकाजी हैं। प.पू. काकाजी के मुँह से हम सभी ने कई बार सुना था कि मैं एक जौहरी हूँ। स्वयं स्वतः सिद्ध, स्वयं प्रकाशित-पूर्ण स्वरूप होते हुए, खुद छुपे रहकर भी सभी प्रगट स्वरूपों का प्रकाश उज्जवल करने में उन्होंने जीवन की धन्यता मानी। अरे ! प.पू. योगी बापा के असली स्वरूप की भी तो इन्होंने ही पहचान कराई। 1952 में साक्षात्कार होने के बाद इन्होंने बिगुल फूंका और खुले मैदान में एक जंग खेलना शुरू किया। अत्यधिक उमंग व उत्साह से डं के की चोट पर गगनभेदी रणकार से बिगुल बजाय कि **बापा एक सामान्य साधु**

नहीं हैं, भगवान का स्वरूप हैं। हम में व जानवर में जितना फर्क है, उतना ही दूसरी ओर हम में व बापा में फर्क है। यह भेद- रहस्य सर्वप्रथम समाज को प.पू. काकाजी ने समझाया और उसके बाद ही बापा को एक अलग दृष्टि से निहारने की दृष्टि समाज ने पाई ! बाकी तब तक तो बापा के बैठने का आसन भी सब के साथ व सरीखा बनता था। बापा के भव्य स्वरूप बारे प.पू. काकाजी द्वारा समझाये जाने के बाद अलग आसन लगना शुरू हुआ। सालों तक अपने व दूसरों की गठरी अपने कंधे पर उठाकर बम्बई की सीढ़ीयाँ चढ़ते हुए प.पू. योगीबापा को तत्कालीन समाज के सभी ने देखा ही था। महिमा की अत्यधिक कसर होगी तभी तो इस प्रकार गठरी उठाने दिए होंगे न ! 200 साल पहले मू.अ.मू गुणातीतानंदस्वामी को संतों ने अपने 40 जोड़ी जूते की गठरी सिर पर उठाने दी होगी- वैसी यह बात है। एक ओर वह स्वरूप कितना छुपा रहा होगा, दूसरा उस समय के संतों व समाज ने उसको कितना पहचाना होगा? प.पू. काकाजीने बापा की महिमा का जो बिगुल बजाया, माहात्म्य की जो बलभरी बातें करी-समाज में फैलाई.....उसी के परिणामस्वरूप आज तो हम छोटे से छोटे साधु को भी अपनी हाजिरी में गठरी या सामान उठाने नहीं देते। उससे जबरदस्ती भी ले लेते हैं। यह महिमा के धोध की गंगोत्री बहाने वाले युगपुरूष प.पू. काकाजी हैं।

स्वरूप महिमा के रूप में प.पू. काकाजी के मुख से अकसर सभी ने यह सुना था कि मन का राज्य छोड़कर गुरूराज्य में प्रवेश कर जाओ - सत्पुरूष के प्रति अखंड दिव्यभाव रखो। इसी बात के संदर्भ में अक्षरपुरूषोत्तम संस्था द्वारा निकली पुस्तक 'अक्षरना हस्ताक्षर' में प्र.ब्र.स्व.प.पू. प्रमुखस्वामी महाराज द्वारा दिये गए निम्न 12 मुद्दे जो कि हर गुरूमुखी साधक के लिए खूब मननीय हैं- वे प.पू. काकाजी की बात की पुष्टि करते हैं।

1. **सत्पुरूष में मनुष्यभाव आए नहीं निरंतर ख्याल रखना और उसमें सम्पूर्ण अखंड दिव्यभाव रखना।**
2. **सम्पूर्ण गरज रखकर उनकी सेवा करनी।**
3. **उनके प्रताप और मर्जी से सभी कार्य होते हैं। हम से कुछ नहीं हो पाता, यूं समझ कर वे ही राजी हों वही और उतनी ही क्रिया करनी।**
4. **सत्संग कार्य है और सत्पुरूष उसका कारण है। इस बात का अनुसंधान करना। सत्संग, मंदिरों, संतों, हरिभक्तों या जो-जो विकास होता है, उन सभी का कारण सत्पुरूष है। इसलिए वे राजी हों वही करना।**
5. **उनसे-ऐसे सत्पुरूष से मोक्ष है। इसीलिए त्यागी हुए हैं। बाकी हमें कोई कितना ही फायदा कर दे, चाहे कैसी भी सेवा करे, हेत करे या हम कैसा ही कठिन कार्य कर पायें, करा पायें लेकिन उसमें सम्मोहित न होकर, सत्पुरूष ही मुख्य रहे। वो कहें, वैसा ही करना। चाहे उसमें हमें दुःख आए या लगे, तब भी वही करना।**
6. **दूसरे के कहने पर दुनिया का राज मिले, चाहे कैसा ही बड़प्पन मिले तब भी वह न्यून है। यह ध्यान में रखकर सत्पुरूष प्रधान रहे वैसा करना। वे जैसा कहें, वैसे खुश रहना।**
7. **बापा की दया से - सत्संग की जैसी गरज है वैसी हमेशा रहे और किसी का संग नहीं लगे।**
8. **दूसरा ममत्व न रहे - एक सत्संग व सतपुरूष का ही ममत्व ! और कोई धून पर चढ़ नहीं जाना - यह निशान रखना। इसी में सुख और शांति समझनी - रखनी।**
9. **सेवा, कथा, वार्ता, भजन-प्रवृत्ति साधुता में रहकर करना।**
10. **हमारी शोभा बढ़े उससे अधिक बापा की शोभा बढ़े वैसा करना, तो बल रहेगा।**
11. **हम क्या करने आए हैं इस बात का निरन्तर विचार करना।**
12. **महिमा की बातें करनी। महिमा कहनी व सुननी। महिमा से ही सुख और बल रहता है। सो ऐसी महिमा का अंग दृढ़ रखना। आज्ञा में रहकर सेवा, कथावार्ता, भजन करना उसमें ही सुख है।**

सच ! साधना यदि पुष्प है तो सत्पुरूष डोर है। उसके बिना कभी भी एकसूत्रता संभव नहीं हो सकती। प्रत्येक साधना में ऐसे सत्पुरूष की प्रधानता रहनी चाहिए तो ही साधना फलती है। बस प.पू. काकाजी के कहने का ढंग अलग था, वर्ना उनका तात्पर्य भी हम सभी से ऐसा ही करवाने का था क्योंकि उन्होंने यह सब अपने जीवन में सांगोपांग धारा हुआ था।

महिमा भरने के साथ-साथ शास्त्रों में प्रभु प्राप्ति का - साधना का अब तक लम्बा व कठिन रूप जो बताया गया था, बदलते युग के साथ-साथ उसको अत्यधिक Shortcut में प.पू. काकाजी ने ढूंढ़-ढूंढ़ कर बताया। पहले

हम मुसाफिरी करते तब कितनी परेशानियाँ, गर्मी आदि सहन करनी पड़ती थी ? जब विज्ञान ने ऐसी कोई तरक्की नहीं करी थी, तब गर्मी में परेशान होकर हम खूब थक भी जाते थे। परन्तु विज्ञान की हुई तीव्र प्रगति व नई खोजों के साथ अब गाड़ियों में tape recorder, A.C. लगने लगे। परिणामस्वरूप गाड़ी में भजन सुनते - सुनते ठंड़क में बैठकर आसानी से यात्रा करते हो गए !

मुसाफिरी की थकावट की बात तो दूर.....परन्तु अपनी काम करने की क्षमता बढ़ गई। इस बात का उदाहरण देते हुए कई बार प.पू. काकाजी आध्यात्मिक मार्ग के लिए भी बोलते कि अब बैलगाड़ी में दिल्ली नहीं जायेंगे। अब तो राकेट का युग आ गया।

पहले हमें बाहर - दूर कहीं पर फोन करना होता था, तो Trunk call book करानी पड़ती और वह भी मुशकिल से लगता था व तब भी फोन पर खूब जोर से बोलें तब सुनाई पड़ता था। पर आज वैज्ञानिक technique की development होते ही जगह -जगह S.T.D., I.S.D. की व्यवस्था हो गई और अब कितनी आसानी से देश, विदेश अमेरिका,लंदन तुरंत फोन जोड़ सकते है। उसी प्रकार अक्षरब्रह्म के मानवस्वरूप में धरती के प्रांगण में अवतरण होने से - तप, ध्यान, योग की यह साधन प्रणाली अब नाकामयाब हो गई। अब तक ऐसा माना जाता था कि इतने तप, व्रत, ध्यान, योग इत्यादि करो तो ही शुद्धिकरण हो सकता है व निर्वासनिक बना जा सकता है। पर अक्षरब्रह्म ने अवतरित होकर इन सभी पर सेरे लगा दिए.... गुणातीतानंद स्वामी ने तो यहां तक कहा कि **ऐसे सत्पुरूष के प्रति केवल सद्भाव में निर्वासनिक**.....ऐसे स्वरूप के संबंध से तुम ब्रह्मरूप ही हो.....यूं मुफ्त में मौज खुली रख दी....

इस रहस्य को सामूहिक रूप में प.पू. काकाजी ने खोल दिया और आज हमारे लिए भगवान भजने के लिए उबड़ - खाबड़ गड्डों, टेढ़े - मेढ़े नुकीले रास्तों का एक समान Level करके एक सरल राजमार्ग खोल दिया। 1986 की जनवरी में गुणातीत समाज को - योगी परिवार को दिए अंतिम संदेश में उन्होंने इस बात का निर्देश भी किया है कि **'हम अब एक ऐसी व्यवस्था कर रहे हैं....'**

इस रास्ते को अधिक से अधिक आसान बनाने नित्य नई खोज कर - करके, खुद अपने जीवन में आजमा कर, अपने जीवन में रख कर प.पू. काकाजी नें हमें **स्वरूपयोग** से शुरूआत करा कर -

स्वरूप उपशम-
स्वरूप अष्टांग, नाभि का भजन,
बिल्ली का बच्चा बनने की बात,
मुरधी के बच्चों की बात,
संकल्प की बिमारी -
अजपाजप -
प्रतिलोमभाव की प्रार्थना -
विरूद्ध प्रकृति वाले भगवदी के साथ मैत्री -
स्वरूपलक्षी सहृद्भाव -
सत्कर्म -
सांख्य का कायदा - क, ख, ग -
रात्रि की प्रायश्चितरूप प्रार्थना -
Fixed tiem प्रार्थना
40 मिनिट का अनुष्ठान -

और कई कितने - कितने फामूले देते ही रहे - देते ही रहे। आखिर..... एकदम सरलता से प्रगति के पथ पर हमें अग्रसर करने सभी के निचोड़रूप... nuclear weapon रूप four point प्रोग्राम दिया !

आज भी यह फार्मूले प.पू. काकाजी की ही तरह जीवंत हैं.... उनकी वाणी परम शाश्वत् है। आज भी उनके द्वारा दिए गए ब्रह्मसूत्रों में से हम अपने तंत्र के मुताबिक यदि एक सूत्र को भी लेकर सुरूचि से चलने का प्रयासमात्र करें तो वह परमदयालु करूणासिंधु पुरूष हमें अपने संबंध से सुखी करेंगे ही....कसर हमारे उनसे ले लेने में रही है। उन्होंने अपने संबंध में आये सभी हरिभक्तों को हर प्रकार से सुखी करने की एकमात्र तमन्ना रखी, उनका व्यवहार, योग - क्षेम खुद उठाया और समय - समय पर संतों - साधकों को स्पष्ट आध्यात्मिक सूझ किस प्रकार दी, उसका निम्न प्रसंगो -- से ख्याल आता है –

Tantra का रहस्य

प.पू. काकाजी ने 1978 में 'The real essense of tantra' नाम की एक अंग्रजी किताब लिखी। उसके बाद वे सोखड़ा पधारे थे। तब उन्होंने मुझे पूछा कि तुमने मेरा लिखा पुस्तक पढा? मैंने दो हाथ जोडकर कहा- मुझे इसमें कुछ पता नहीं चलता, क्योंकि मैं इंगलिश पढ़ना नहीं जानता। कृपा करके आप ही मुझे उसका सार-निचोड़ बता दो। यह सुनकर प.पू.काकाजी बोले-चल बैठ ! मैं तुझे एक ही वाक्य में बता देता हूँ। यूं कहकर बात करी कि तुम में 100 गुण

हों, पर यदि तुम्हें प्रभु का संबंध नही है तो सब शून्य है और दूसरी ओर तुम्हारे में 99 अवगुण हों पर यदि तुम्हें प्रभु का संबंध है तो वे पूरे 100 गुण हैं..... यही है Tantra.... गहरे से गहरे विषय के बारे सामान्य साधक को ऐसी अनुपम सूझ ऐसे सत्पुरुष के सिवा अन्य कौन दे भी सकता है?

- पू. शास्त्रीस्वामी, हरिधाम

सिंह बनो वही सच्चा उत्सव

गुणातीत द्विशताब्दी के Function की तैयारियों के लिए मुझे बम्बई से हरिधाम जाने निकलना था। मैं ठाकुरजी को तथा प.पू. काकाजी के पांव छूकर दण्डवत् करके निकलने जा रहा था। उस समय प.पू. काकाजी ने कहा-**'गुणातीत द्विशताब्दी मनाने के लिए जा रहे हो, पर हरिप्रसादस्वामिजी के प्रति मनुष्यभाव व मायिकभाव टल गया हो या टालने लगे हुए हो ऐसे सिंह कितने तैयार हुए? मेरे विचार से यह सच्ची गुणातीत द्विशाब्दी मनाई कही जायेगी। तुम सब रूची रखना और प्रार्थना करना, मैं भी भजन - प्रार्थना करूँगा।'**

प.पू. काकाजी ने कभी किसी सेवक को स्वयं में जोड़ने का आग्रह नहीं रखा और जो जिस जगह जुड़ा हुआ हो- उसको वहां और अधिक जोड़ने की पुष्टि करी है और उसे बाधारूप बनती चीजों को पिघालने- आगे चले जाने की सूझ देकर, बल देकर खुद भजन- प्रार्थना की है और कराया है। यह उनकी एक अनोखी विशिष्टता थी।

-पू. दासस्वामी, हरिधाम

दूरदर्शिता

मैने आणंद से 6 कि.मी. दूर दूसरी एक प्रीटिंग प्रेस खोलने बारे सोचा। प.पू. योगी बापा के वरद् हस्तों उद्घाटन हो, ऐसी मेरी इच्छा थी। मैंने बापा को इस बारे में कहा तो बापा ने मुझे लिख कर भेजा कि- **जशभाई (पू. साहेब) को कहकर, दादुभाई (प.पू. काकाजी) के हाथों उद्घाटन कराना और दादुभाई द्वारा किया गया उद्घाटन हमने ही किया है, ऐसा ही मानना।** पू. साहेब ने प.पू. काकाजी को यह बात करी तो प.पू काकाजी ने हाँ कही और उन्होंने आकर प्रेस का उद्घाटन किया। तब उन्होंने मुझे कहा कि यह स्थान ठीक नहीं। कहीं दूसरी जगह अच्छे स्थान पर जगह ढूंढो, हम भी तुम्हारे लिए धून्य करेंगे कि तुम्हें अच्छी जगह मिल जाए।

मुझे आश्चर्य तब हुआ जब छः ही महीने में मुझे प्रेस के लिए अच्छी जगह मिल गई। इस प्रकार उनकी दूरदर्शिता की मुझे सचोट प्रतीति हुई।

पू. विट्ठलदास पटेल-आणंद

तो आईये 12 जून के महामंगलकारी दिन पर हम अपनी संकुचित मान्यताओं के घेरे को तोड़कर उनके मुताबिक जीवन जीने की दिल की सच्चाई से प्रतिज्ञा करें।

✡✡✡✡✡

अनिर्देश की गतिविधियाँ

पंजाब के भक्तों के आग्रहवश प.पू. गुरूजी ने अप्रैल की आखिर में लुधियाना, सवद्दी, जगरांव जाने का प्रोग्राम बनाया। 28 अप्रैल की सुबह पू. गुरूजी दिल्ली से रवाना हुए और पानीपत में प.भ. ओमप्रकाशजी शमीम के यहां दोपहर का भोजन करके सांय में पुराने जोगी प.भ. बाम्बा साहेब के यहां लुधियाना पहुँचे। लुधियाना के हरिभक्तों को दर्शन, सेवा, समागम का लाभ देकर दूसरे दिन जगरांव जाने निकले.....आश्चर्य की घटना यह बनी कि प.पू. गुरूजी का इस बार मोगा जाने का प्रोग्राम नहीं था, पर गाड़ी में सब के सब सो जाने से वाहनचालक गाड़ी मोगा ले गया। उस समय तो मोगा से जगरांव वापिस आ गए, पर बाद में इसका रहस्य पता चला।

जगरांव में प.पू. गुरूजी को मोगा के एक हरिभक्त द्वारा पता चला कि प.पू. काकाजी के समय के मोगा के प.भ. परसराम वैद्यजी के लड़के सुरेन्द्र चावला का देहांत हो गया। करीब दस साल पहले प.पू. काकाजी व प.पू. गुरूजी के सान्निध्य में रहकर प.भ. सुरेन्द्रजी ने शराब छोड़ने का प्रयास भी किया। किसी कारणवश पिछले दस

सालों में उनका सत्संग व संतों से अधिक संबंध नहीं रहा.....पर सबसे अधिक आश्चर्य की बात कि देहांत से दो दिन पूर्व सुरेन्द्रजी ने अपनी मातुश्री को कहा कि मैं मर जाऊं तो आप चाहे मेरा क्रियाकर्म हिन्दु विधि से जैसे भी चाहो करना, पर दिल्ली वाले गुरूजी को रू. 1100.00 देकर उनसे मेरे लिए महापूजा जरूर करा देना। देहांत से दो दिन पूर्व यह बात कहना स्पष्ट बताता है कि उसकी स्मृति पटल पर प.पू. काकाजी व संतगण ही छाए थे। वर्ना दस साल से कोई संबंध न होते हुए भी ऐसा कह जाना....असल में यह बात भगवान स्वामिनारायण द्वारा दिए गए अभय वरदान कि - अंतकाल के समय मैं मेरे आश्रित को लेने आऊंगा....उसकी सचोट प्रतीति कराती है और इसी कारण प.पू. काकाजी ने पू. गुरूजी की गाड़ी जबरन मोगा पहुँचा कर वहां जाने संकेत तक दिया... आखिर चेतना की पुकार पर प.पू. गुरूजी को वहां पहुँचाने ही थे।

पू. गुरूजी को जगरांव में जब यह खबर मिली तो दूसरे दिन वे मोगा गए..... पू. गुरूजी के आने से वैद्यजी खूब खुश हो गए....पू. गुरूजी ने वहां भजन - प्रार्थना की। अ.नि. सुरेन्द्र चावला मरणोत्तर अपने नेत्रदान करके सत्कर्म कर गए हैं। प्रभुस्वरूप प.पू. काकाजी व सर्व गुणातीत स्वरूपों अ.नि. सुरेन्द्र चावला की पवित्र आत्मा को सदैव अपनी सेरेछाया में रखें व उनके परिवारजन को यह दुःख सहने का अमाप बल दें.....

✡✡✡✡✡

गुणातीत समाज के सभी मुक्तों को प्रार्थना.....

आप सभी को यह जानकर आनंद होगा कि सर्व गुणातीत स्वरुपों के लाडले - अन्तर के प्रसन्नतापात्र हमारे प्यारे प.पू. गुरूजी की 60वीं जयंती (हीरक जयंती) 3 फरवरी 1997 के महामंगलकारी दिन दिल्ली में प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में मनायेंगे.....इसी दिन प.पू. काकाजी का साक्षात्कार दिन व दिल्ली मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा की दिव्य स्मृतियाँ जुड़ी हैं। सो हम सभी के लिए यह परम स्मृति का दिन है।

प.पू. काकाजी निरंतर स्मृति करके ही हर क्रिया करने पर जोर देते थे। आज भी उनकी परावाणी कानों में गूंजती है कि भगवान का नमक डाल कर हर एक क्रिया करो..... प.पू. गुरूजी भी आजकल निरंतर इसी बात पर जोर दे रहे हैं कि निर्गुण स्वरूप की स्मृति करके भजन करने से अन्दर की वृत्तियाँ पिघलकर निकल जायेंगी और हम निर्गुणभाव को पा जायेंगे।

तो, हम अभी से-इसी 12 जून प.पू. काकाजी की जयंती के महामंगलकारी दिन से ही प.पू. गुरूजी की 60 वीं जयंती निमित्त एक भक्ति अदा करने की भावना से नियमित रूप से रोज कम से कम 260 बार 'स्वामिनारायण' महामंत्र प्रत्यक्ष स्वरूपों की स्मृति सहित लिखना शुरू करें....

1997 में पू. गुरूजी की जयंती के अवसर पर महापूजा व यज्ञ करके इन स्वामिनारायण महामंत्र की पोथियों की आहुति दी जाएगी और हम सभी को निरन्तर 'स्मृति यज्ञ' का अनुसंधान रहेगा।

जो 260 से अधिक लिखना चाहे या अधिक लिख पायें वे अवश्य अधिक लिखें ही.....

सूचना

1. 'स्वामिनारायण' महामंत्र की लिखित मंत्र पोथियाँ सभी भाई 26 जनवरी 1997 तक में दिल्ली अशोक विहार मंदिर में भिजवा दें व बहनें अपनी मंत्र पोथियाँ अक्षरज्योति - दिल्ली भिजवायें....
2. आप स्वामिनारायण महामंत्र हिन्दी -अंग्रेजी -गुजराती -मराठी - गुरुलिपि या कोई भी भाषा में - नीली या लाल किसी भी स्याही से लिख सकते हैं।
3. मुक्तों जब अपनी मंत्र - पोथियाँ भेजें तब वे अपने लिखे हुए Total मंत्रों की संख्या भी पोथी में लिखकर भेजें।

भाईस्वामी के हार्दिक
जय स्वामिनारायण !

स्वामी की बातें

425. भगवान के भक्त के लिए विषय नहीं है। उसे तो भगवान की आज्ञा में रहना है। सो सावधान रहकर आज्ञा में ही रहना।

प्र - 5,208

426. बकरे से लेकर हाथी जितना भी बड़ा हो तो वह भी पिंजरे में रहता है, परन्तु सिंह पिंजरे में नहीं रह सकता। उसी प्रकार जो मुमुक्षु है, वह माया के बंधन में नहीं रह सकता। सो, इस जोग में आए हैं, उन भगवान के भक्त को मनुष्य जैसे नहीं मानना।

प्र - 5,209

427. भगवान और साधु दो ही रखने। सो, वह गहने रख कर रूपये देने के समान है। यूं यह दो रखकर व्यापार करना।

प्र - 5,212

428. पाँच गुण युक्त संत यदि नहीं मिल पाये, तो एक - एक गुण सीख लेना। और यदि पाँच गुणों युक्त यदि एक ही संत मिल जाये, तब तो पूर्णाहुति हो गई।

प्र - 5,213

429. सिर के नीचे से सराना निकाल कर देते हुए बोले कि फिर इसकी आदत पड़ जाती है। किसी चीज की आदत तो केवल एक सहजानंदस्वामी महाराज को नहीं पड़ सकती, बाकी सबको तो पड़ जाये।

प्र - 5,214

430. तीन व्यक्ति सुखी हैं। एक तो -

- ❊ बड़े साधु कहें सो करता है वह
- ❊ दूसरा जो मन की ना माने, ऐसा ज्ञानी तथा
- ❊ तीसरा जिसे कुछ चाहिए ही नहीं वह।

आशा हि परमं दुःखं, निराशा परमं सुखं।

यह तीन सुखी हैं। *प्र - 5,215*

431. जिसके कारण यह सारा जगत है, उसको कोई नहीं जानता। भगवान मनुष्यरूप में हो और उन्हें पहचाने वही समाधि है तथा धर्मी भी वही है। यूं सभी अंग उसमें आ गए। बातें करने से बहुतों को निश्चय होता है, सो बातें करना, वह अधिक है.... उपासना व आज्ञा दो का बल रखना और आज्ञा नहीं पालने से दुःख आता है। दृढ़ निश्चय रखना, जो किसी के बहकाने से भी हिले नहीं। इन्द्र ने पाँच ब्रह्महत्या की थी, परन्तु निश्चयरूपी मूर्ति धारने से टल गई ! एक - एक विषय गिरनार पर्वत जैसा है, जो टल नहीं सकता, पर निश्चय तथा आशरे का बल रखना.....

प्र - 5,216

432. पेड़ या पशु के देह से संबंध में आये हों या मनुष्य देह में सीधा सामान दिया हो या राह दिखाई हो - यूं कई प्रकार से संस्कार पड़े होंगे, उन सभी का काम हो जायेगा।

प्र - 5,217

433. फिलहाल तो महाराज के दर्शन करने से जैसा मोक्ष होता था, वैसा ही मोक्ष होता है। ज्ञान तो उन दिनों से अधिक वृद्धि को पाया है और अभी जो हरिभक्त हैं उनसे मिले हुए का जो कोई दर्शन करेगा उसका भी व वैसा ही सौ साल तक कल्याण होगा। उसके बाद किसी मुक्त को भेजेंगे और कल्याण का मार्ग वैसा ही खुला रहेगा।

प्र- 5,218

434. लोक तो चाहे कुछ भी कहे, वह मानना नहीं व खुद के धर्म में रहकर प्रभु को भजना और दूसरा सब कुछ किसी और हेतु से होगा, यूं समझना।

प्र - 5,219

✡✡✡✡✡

सूचना

'अनिर्देश' स्वामिनारायण मंदिर - दिल्ली की सुविधा के लिए व आप सभी हम से सुचारू व शीघ्र पत्र व्यवहार कर सकें इस हेतु मंदिर के सामने ही सुविधा कोर्नर में जो फैक्स लगा है वह नम्बर 27138119 आप नोट कर लें।

कृपया ध्यान दें कि सन्देश पर फैक्स सामने 'अनिर्देश' - स्वामिनारायण मंदिर पहुँचाने का निवेदन करें।

व्रतोत्सवसूची

1) दि.	1.6.95	गुरूवार	प.पू. पप्पाजी का दृष्टा दिन
			गुणातीत ज्योत स्थापना दिन
2) दि.	8.6.95	गुरूवार	भगवान स्वामिनारायण का स्वधामगमन दिन
3) दि.	9.6.95	शुक्रवार	एकादशी, व्रत
4) दि.	11.6.95	रविवार	अनिर्देश में रविवार सुबह 6.30 से 9.00
			ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का प्रागट्यदिन मनायेंगे।
5) दि.	12.6.95	सोमवार	ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी का प्रागट्य दिन
6) दि.	13.6.95	मंगलवार	पूर्णिमा - एक महिने के जपयज्ञ की पूर्णाहुति
7) दि.	23.6.95	शुक्रवार	योगिनी एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
'ANIRDESH' Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Chowdhry Mudran Kendra** 12/3, Sri Ram Marg, South Maujpur, Delhi-110 053